डा0 भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक विचारों का अध्ययन

प्रदीप* सुनीता रानी**

* शोधार्थी, लोक प्रशासन विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविधालय रोहतक, मोबाईल

** शोधार्थी, लोक प्रशासन विभाग,चौधरी देवीलाल विश्वविधालय सिरसा मोबाईल

सारांश

बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर जी एक महान समाज सुधारक थे। बाबा साहब एक ऐसे समाज का विकास करना चाहते थे, जिसमें समानता,स्वतन्त्रता और भ्रातृत्व का साम्राज्य हो। बाबा साहब लोगों में सामाजिक चेतना पैदा करना चाहते थे लेकिन सामाजिक विकास एंव सामाजिक समस्याओं के सुधार के लिए वे सामाजिक चेतना को अति आवश्यक मानते थे। बाबा साहब के अनुसार सामाजिक चेतना ही व्यक्ति के अधिकारों का रक्षक है। डा0 अम्बेडकर द्वारा किए गए सामाजिक संघर्ष का उद्देश्य उपेक्षित वर्ग पर होने वाले अत्याचारों को खत्म करना था परन्तु बाबा साहब चाहते थे कि समाज के सभी वर्गो का सभी क्षेत्रों में समान स्थान होना चाहिए और सभी वर्ग के लोगों को जीवन में उपर उठने के समान अवसर दिए जाए। इन सभी कार्यो के लिए डा0 बी0आर0 अम्बेडकर जी ने कड़ी मेहनत व लगन से कार्य किया। शोधपत्र में यही वर्णन किया गया है कि डा0बी0आर0 अम्बेडकर ने जिस तरह से समाज में छुआछात जातीय भेदभाव को सहन करके किस प्रकार से इस समस्या के समाधान हेतू प्रयासरत रहे। प्रस्तुतशोध पत्र में बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक क्षेत्र में किए गए अहम बदलावों का वर्णन किया गया है।

मुख्य शब्द :–डा0 भीमराव अम्बेडकर,सामाजिक विचार,सामाजिक चेतना,छुआछुत,भेदभाव।

भूमिका

महान विद्वान एंव उच्च कोटि के समाज सुधारक एंव संविधान निर्माता डा0 भीमराव अम्बेडकर भारत की बीसवीं सदी की एक विशिष्ट विभूति थे। बाबा साहब ने भारत में फैली विभिन्न सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए अपना पूरा जीवन समाज सेवा में लगा दिया। बाबा साहब आजीवन समाज सेवा का कार्य कड़ी लगन व मेहनत से करते रहे। डा0 भीमराव अम्बेडकरद्वारा किया गया प्रथम कार्य(आन्दोलन) समाज सुधार से सम्बधिंत था। उन्होने 1920 में एक सामाजिक संगठन बनाने के लिए सभा का आयोजन किया। जिसकी अध्यक्षता स्वंय बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर जी ने की। इन्होने हजारों अछुतों की उपस्थिति में **'अत्यंज्य संघ'** नामक सामाजिक संगठन की स्थापना की। इस संगठन को चन्दा इकट्ठा करके बनाया गया था, जो असहाय बच्चों की सहायता करता था।[1] डा0 अम्बेडकर के अनुसार,"समाज सेवा राजनितिक से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है" क्योंकि समाज सेवा से व्यक्ति का चरित्र बनता है।[2] समाजवाद के विषय में अम्बेडकर जी ने कहा था कि मानव समाज में व्याप्त दुख है, जिसे दूर किया जाना चाहिए ताकि लोग सुख से रह सकें। समाज और समाजवाद के संबध में बातचीत करने से पहले लोगों को अज्ञान तथा निर्धनता के प्रति सद्भाव अपने दिलों–दिमाग में पैदा करना चाहिए। गरीबी एक सामाजिक बुराई है। समाजवादी प्रक्रिया केवल उसी समय सम्भव है, जब प्रशासक उसकी सफलता के लिए कार्य करें। राजनितिक शक्ति ऐसे लोगों के हाथों में नही होनी चाहिए जो समाजवादी आदर्शों के खिलाफ हो। बाबा साहब ऐसे समाज के पक्षधर थे जिसमें अधिक से अधिक उत्पादन हो और धन पूंजीपतियों के हाथ में न जाकर धन का समान वितरण हो अर्थात पूंजीपति वर्ग ऐसे समाज के पक्ष में नही है। इस प्रकार बाबा साहब अच्छे समाज के पक्षधर थे।[3] बाबा साहब ऐसी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, जो देश में उपस्थित समस्याओं को समझकर उचित समाधान करना चाहते थे।

साहित्य समीक्षा :–

अम्बेडकर बी0आर0 (1945)[4] ने अपने ग्रन्थ "व्हाट द कांग्रेस एंड गांधी हैव इन टू डू" में गाधीं जी द्वारा चलाए गए दलित सुधार आंदोलन के समकक्ष लिखकर लोगों का ध्यान खींचा था। इसमें अम्बेडकर ने गांधी द्वारा चलाए गए आन्दोलन का विरोध किया क्योंकि गांधी जी कोई ठोस कदम उठाए बगैर ही दलितों में सुधार लाना चाहते थे। जबकि अम्बेडकर दलितों के हितों तथा उनके अधिकारों के विरूद्व आवाज उठाकर उनकोआत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। इसमें उन्होने कांग्रेस तथा गांधी जी की दलित सुधार आन्दोलन में किए गए कार्यो की नाकामी को बताया तथा कांग्रेस की दलितों को दबाने की नीति पर भी सवाल उठाया।

कीर धंनजय (1962)[5] ने अपनी पुस्तक "डा0 अम्बेडकर लाईफ एंड मिशन"में लेखक ने डा0 अम्बेडकर के जीवन व कार्यो का वर्णन किया गया है। इसमें बताया गया है कि किस तरह से अम्बेडकर ने एक अस्पृश्य समझी जाने वाली जाति में जन्म लेकर उच्च जातियों के द्वारा किए गए अत्याचारों को सहन किया तथा उनके विरूद्व आवाज उठाकर दलितों में एकजुटता का संचार किया। इन्होने दलितों के अधिकारों को प्राप्त करने में दिन–रात एक कर दी। अंत में उन अधिकारों को प्राप्त करने में सफलता भी प्राप्त की।

मेहता चेतन(1991)[6] द्वारा प्रकाशित पुस्तक "युग द्रष्टा डा0 भीमराव अम्बेडकर" में लेखक ने बाबा साहब के जन्म,शिक्षा,दलितों के मसीहा,विधि शास्त्री,सविंधान निर्माता,उनका धर्म परिवर्तन,उनकी अन्तिम यात्रा व भारत रत्न प्राप्ति का वर्णन किया गया है।

लिमये मधु(1997)[7] ने अपनी पुस्तक "बाबा साहब अम्बेडकर एक चिन्तन" में बाबा साहब को एक सामाजिक क्रान्तिकारी के रूप में दर्शाया है। इसमें बताया गया है कि समाज में उन्होने दलितों के उद्वार व अन्य प्रकार की सामाजिक बुराईयों को खत्म करने के लिए अथक प्रयास किये जिसमें काफी हद तक सफल रहे। इस पुस्तक में बाबा साहब एक जाति संस्था उन्मूलक बाबा साहब व गांधी जी के विचार–विमर्श के साथ–2 उनकी भारत पाक सम्बन्धी भूमिका,उनके सामाजिक,राजनितिक,आर्थिक एव धर्म परिवर्तन सम्बन्धी घटनाओं का वर्णन किया गया है।

रतु नानक चन्द(2005)[8] ने अपनी पुस्तक "बाबा साहब डा0 अम्बेडकर संस्मरण और स्मृतिया" में लेखक द्वारा बाबा साहब के बचपन,शिक्षा उनके द्वारा किए गए सन्देशों,आन्दोलनों बाबा साहब अम्बेडकर के साथ अपने अनुभव एंव स्मृतियों का वर्णन किया गया है।

बौद्व शीलप्रिय (2008)[9] ने अपनी पुस्तक "पूना पैक्ट क्यों,क्या और किसके लिए" में लेखक ने बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर द्वारा दलितों की मांग,पूना पैक्ट, गांधी जी द्वारा आमरण अनशन व उसके बाद की स्थिति का बडा ही सुन्दर विवरण किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

- बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक विचारों का अध्ययन करना।

शोध पद्वति :–

वर्तमान शोध अध्ययन वर्णनात्मक,ऐतिहासिक तथा विशलेषणात्मक है। इस अध्ययन के लिए सामग्री को बहुत ही सावधानीपूर्वक एकत्रित किया गया है। जो द्वितीय स्त्रोत पर आधारित है। विषय से सम्बधिंत पुस्तकों विभिन्न विद्वानों के लेखों,राजनीतिक जर्नलों,नवीनतम अध्ययन की सहायता ली गई है।

अध्ययन की सीमाएं :–

प्रस्तुत शोध प्रबंध बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर जी की मृत्यु के कई दशकों बाद किए जाने के कारण स्वंय अम्बेडकर जी के दर्शनों एंव साक्षात्कार के बिना यह अध्ययन केवल उनके भाषणों,लेखों,कार्यो एंव पुस्तकों तथा सम्बन्धित विषय पर अन्य लेखकों के विचारों पर आधारित है।

बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर जी के सामाजिक विचार :–

डा0 बी0आर0 अम्बेडकर एक महान समाज सुधारक थे। उन्होने स्वर्ण हिन्दुओं के अपमानजनक व्यवहार का जमकर विरोध किया और हिन्दू धर्म की धज्जियां उडा दी। वे हिन्दू समाज में छुआ–छूत,जातीय भेदभाव से अत्यन्त दुखी थे और किसी भी कीमत पर इस भेदभाव को समाज से मिटाना चाहते थे। उन्होने दलित वर्गो के लोगों की स्थिति में सुधार लाने हेतू जाति व्यवस्था पर भी प्रहार किया। अछूत समझे जाने वाले लोगों को उन्होने संगठित किया तथा उन्हे समानता का अधिकार दिलाने हेतू आन्दोलनों का नेतृत्व किया। सामाजिक क्षेत्र में डा0 भीमराव के मतों तथा उनके कृत्यों का अध्ययन निम्न प्रकार से किया जा सकता है।[10]डा0 अम्बेडकर ने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अस्पृश्यता निवारण आन्दोलनों के कर्मक्षेत्र में कूद पडे, जो उनके जीवन का एकमात्र ध्येय था। बाबा साहब महाराष्ट्र के रानाडे,भंडारकर,तिलक आदि की पंरपरा के विद्वान थे। अस्पृश्य समाज में उनका नाम सर्वोच्च था। उस समय के समाज–सुधारकों में भी बाबा साहब का नाम शीर्ष के गिने–चुने व्यक्तियों में था। अस्पृश्यता निवारण आन्दोलनन हिन्दू समाज में महान क्रान्तिकारी आन्दोलन था। इस विचार को सर्वप्रथम महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले ने समझा और इसकी प्रगति के लिए उन्होने यथाशक्तिकार्य किया। डा0

अम्बेडकर ज्योतिबा फुले की परंपरा के क्रान्तिकारी समाज सुधारक थे। उनका अछूतोद्वार आन्दोलन में आगमन समाज क्रान्ति का प्रतीक था।[11]

21 मार्च 1920 ई0 को डा0 अम्बेडकर ने कोल्हापुर राज्य के मानगांव में अछुतों के एक सम्मेलन की अध्यक्षता की। सम्मेलन में उपस्थित कोल्हापुर के साहु जी महाराज ने अछुतों को संबोधित करते हुए कहा था, "अब तुम्हारा नेतृत्व डा0 अम्बेडकर कर रहे है, जो तुम्हारे ही समाज से है। मई 1920 के अखिल भारतीय अछुत सम्मेलन में डा0 अम्बेडकर ने जोरदार शब्दों में कहा था, "मैं मानता हूं कि स्वर्ण हिन्दू अछुतों की भलाई के लिए कार्य कर रहे है परन्तु उनकी व्यथा–कथा को वे नही जानते, उनका दुख–दर्द एक अछुत ही समझ सकता है, जो स्वंय उनके बीच जनमा हो।[12]जुलाई 1924 में बाबा साहब ने एक सामाजिक संगठन "बहिष्कृत हितकारिणी सभा"बनाई। इस सभा का उद्देश्य अछुत भाईयों को यह सन्देश देना था कि उन्हे उद्वार के लिए अपने पैरों पर स्वय खडा होना चाहिए। सन् 1925 में डा0 अम्बेडकर ने रत्नागिरी जिले के मालाबार गांव में "बम्बई अस्पृश्यता परिषद्" की स्थापना की। इस परिषद् का उद्देश्य अछुतों में शिक्षा प्रसार,छात्रावास,वाचनालय खोलना,औधोगिक एंव कृषि विद्यालय,सामाजिक सुरक्षा और अस्पृश्यता उन्मूलन आन्दोलन को तेज करना था। अछुतों के उद्वार के लिए बाबा साहब ने "बहिष्कृत भारत" नामक समाचार पत्र का प्रकाशन भी किया।[13]

डा0 अम्बेडकर ने अपने विचारों को व्यवहारिक रूप दिया। उन्होने सन् 1927 में महाड सत्याग्रह के दौरान अछुत स्त्री–पुरूष को अपने अधिकारों की पूर्ति के लिए चौवदार तालाब के प्रयोग के लिए उत्साहित किया। स्वंय सत्याग्रही बन सर्वप्रथम तालाब से जल ग्रहण किया जहाँ सदियों से अछूतों पर प्रतिबन्ध लगा था। इसी तरह 1930 में उन्होंनें नासिक में मन्दिर प्रवेश अभियान छेड़कर कालाराम मन्दिर में पूजा अर्चना करने के अधिकार को प्राप्त किया। इस अछूतोद्वार अभियान ने उस समय गम्भीर रूप धारण किया, जब असमानता, दमन और अन्याय के विचारों पर आधारित मनुसमृति को 25 दिसम्बर, 1927 के दिन बाबा साहब ने जलाकर नये विधान की मांग की ताकि बहुसंख्यक लोगों का जीवन अनुसूचित किया जा सके।[14]बाबा साहब ने गोलमेल सम्मेलनों में भी उपेक्षित वर्ग के उद्धार को पक्ष दृढ़तापूर्वक रखा और उनकी मांगों के लिए अडिग रहे। आखिर 'पूना समझौते' के बाद अछूतों की समस्या को प्रमुखता मिल गई। अस्पृश्यता निवारण के लिए कांग्रेस का आन्दोलन व्यापकर रूप लेने लगा। इसी बीच गाँधी जी ने सितम्बर 1932 में 'आखिल भारतीय छुआछुत निवारण संघ' की स्थापना की। डॉ0 अंबेडकर ने सुझाव दिया कि इस संघ की समितियों में अछूतों का बहुमत होना चाहिए जिनका उद्देश्य परिगणित जातियों के ही आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक उत्थान तक सीमित रहे।[15]

जनमानस में नाम कमाने वाले महान भारतीय विद्वान व छुआछुत निवारण मसीहा डा0 भींवराव अम्बेडकर ने 15 अगस्त, 1946 के प्रथम विधि मन्त्री पद की शपथ ली। 15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हुआ। कांग्रेस ने बाबा साहब के गुणों का सम्मान किया। 29 अगस्त, 1947 को संविधान प्रारूप समिति का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष डॉ0 भीमराव अम्बेडकर नियुक्त किए गए। अब अछूतों को समानता का पूरा हक दिलाने का अधिकार मानो कांग्रेस ने उन्हें सौंपा। जिस समानता के लिए बाबा साहब लड़ाई लड़ रहे थे उस कार्य को पूरा करने व अन्याय और समानता को दूर करने आ अवसर उन्हें मिला।[16] ''अस्पृश्यता विषयक अपराध'' विधेयक पर 6 सितम्बर 1954 को राज्य सभा में बोलते हुए बाबा साहब ने कहा, '' अस्पृश्यता के प्रति अपराध करने वालों को सजा दिए बिना उन्मूलन नहीं होगा।समाजिक बहिष्कार करने वालो को सजा देनी चाहिए क्योंकि वे अपनी अच्छी स्थिति के कारण देहातों में अस्पृश्यों का बहिष्कार करते है और अस्पृश्यों को संविधान से प्राप्त अधिकारों के उपयोग में द्वेष भावना कर सकते है।[17]इसी कारण संविधान निर्माताओं ने 29 अप्रैल, 1947 को छुआछुत अपराध घोषित किया। संविधान समिति ने सारे विश्व को गरजकर बताया कि अस्पृश्यता की रूढ़ि बंद हो गई है। किसी भी रूप में वह अब शेष नहीं रहेगी। अस्पृश्यता के कारण व्यक्ति पर दुर्बलता लादी गई तो वह गुनाह माना जाएगा।[18]

अस्पृश्यता और छुआछुत जैसी बुरी कुरूति की तरह ही बाबा साहब जाति प्रथा व वर्ण व्यवस्था के भी घोर विरोधी थे। डॉ0 अम्बेडकर हिन्दु धर्म में व्याप्त चार्तुवर्ण में अछुतों की स्थिति सबसे निचे होने के कारण काफी दुखी थे। गाँधी जी अछूतों के लिए कार्य करते हुए उनकी दयनीय स्थिति में कोई सुधार ना ला सके। इसका मुख्य दोष यही था कि वे हिन्दु धर्म में प्रचलित चातुर्वर्ण में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहते थे। इसका सबसे बड़ा सबूत गाँधी जी ने अछूतों को हिन्दु समाज का अभिन्न अंग मानकर इनको 'हरिजन' नाम दिया।[19]डॉ0 अम्बेडकर ने गीता व वैदिक वर्ण व्यवस्था को भी गुणकर्मानुसार माना है। गांधी जी के विचारानुसार ''बेटा बाप का ही धन्धा करें'' के विरूद्ध बाबा साहब ने कहा कि यह पैतृक व्यवस्था अनिश्चित रूप से जाति भेद का ही समर्थन करती है।[20]डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी ने हिन्दु कोड

बिल के द्वारा भी सभी हिन्दुओं को एक ही कानून से शासित होने व अन्तर्जातीय विवाह व भोज की वकालत की थी ताकि भेदभाव को पूर्णतः समाप्त करने में एक नए समृद्ध समाज का निर्माण किया जा सके। बाबा साहब ने इसी भावना से सन् 1948 में एक ब्राहमण महिला 'सरिता कबीर' से शादी कर सामाजिक शिक्षा का प्रसार किया था। लेकिन वे जीवन के अन्त तक जाति–पाति के भेदभाव को पूर्णतः समाप्त करने में सफलता हासिल न कर सके। आज भी यह नासूर विकास की गति पर कलंक बनकर देश की एकता व अखण्डता की जड़ों को खोखला कर रहा है।[21]

भारतीय समाज में नारी, शिक्षा, समता और स्वतन्त्रता के प्रयास काफी समय से हो रहे थे। विभिन्न समाज सुधारकों द्वारा छेड़े गए क्रान्तिकारी आन्दोलनों को आगे बढ़ाने और उसे मूर्त रूप देने के लिए डॉ0 अम्बेडकर ने सदियों से चले आ रहे नारी उत्पीड़न और शोषण को समाप्त करने तथा नारी को अन्धेरे से निकालकर प्रकाश की तरफ बढ़ाने का जो रास्ता दिखाया उसके लिए बाबा साहब अंबेडकर प्रशंसा के पात्र है।[22]

बाबा साहब ने सन् 1942 में अखिल भारतीय दलित समाज का पहला अधिवेशन आयोजित करना तय किया। अधिवेशन में जनसभा को सम्बोधित करते हुए बाबा साहब ने बताया कि उन्होंनें अछूतों के स्वतंत्र दल को मान्यता दिलवाने के लिए गोलमेल परिषद् से लेकर लम्बे समय तक कड़ी मेहनत करनी पड़ी। आयोजित अधिवेशन की तरफ से बाबा साहब को अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया। बाबा साहब ने इसी अधिवेशन में 'शिक्षित होइए', आन्दोलन कीजिए और 'संगठित होइए' का सन्देश दिया। उसी मण्डल में दलित वर्गीय महिला परिषद् भी आयोजित हुई। लगभग 75000 लोगों की भीड़ में 25000 महिलायें उपस्थित थी। डॉ0 अम्बेडकर ने महिलाओं को भी सन्देश दिया कि मैं स्त्री समाज की उन्नति के आधार पर ही समाज की नापतोल करता हूं। महिलाओं को भी संगठित होना चाहिए, बहनों साफ सुथरी रहिए, बुरी बातों से दूर रहिए, लड़कियों को शिक्षा दीजिए। उनके मन में महत्तवाकांक्षा पैदा होनी चाहिए। शादी जल्दी करने की कोशिश न करें।[23] कानून मंत्री बनने पर डॉ0 अम्बेडकर ने केवल दलित वर्ग के लिए नही बल्कि सभी वर्गो के उत्थान हेतू हिन्दु कोड बिल तैयार करवाया। हिन्दु कोड बिल के द्वारा पहली बार महिलाओं को पिताजी की जायदात में हिस्सा दिलाने की बात कही गई। हिन्दु कोड बिल के मुख्य बिन्दु निम्न हैः–

- महिला का सम्पति में पूर्ण अधिकार।
- पुत्रों का भी सम्पति में हिस्सा।
- महिलाओं के लिए भी तलाक का प्रावधान।
- केवल जन्म न कि योग्यता के आधार पर मिले अधिकारों की सम्पति।[24]

बाबा साहब की लगन व पहल के परिणामस्वरूप ही फरवरी,1994 में कोयला खदानों में कार्य करने वाली महिलाएं, मजदूर जो पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करती है, उन्हें पुरूष के समान पगार पाने का अधिकार मिल गया। मजदूरों की कमी को देखते हुए और इस समस्या के समाधान के लिए महिला श्रमिकों को खदान में कार्य करने पर लगा प्रतिबन्ध भी हट गया।[25]डॉ0 अम्बेडकर ने अपनी मेहनत और संविधान द्वारा शिक्षा के द्वार सभी भारतीयों के लिए खुलवाए। उन्हीं की मेहनत से भारतीय संविधान में सभी बच्चों को चौदह वर्ष की आयु पूरी करने तक निःशुल्क शिक्षा देने का उपबंध किया गया। इसके साथ ही यह उपबन्ध भी किया गया कि राज्य निधि से पूर्णतः किसी भी शिक्षा संस्थान में कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी जायेगी।[26]डॉ0 अम्बेडकर भारत में फैली हिन्दु धर्मांन्धता से भी काफी परेशान थे। वे हिन्दु धर्म को ही समाज में फैली सभी कुरीतियों की जड़ मानते थे। बाबा साहब का मानना था कि हिन्दु धर्म ग्रन्थों ने ही जाति प्रथा, अशिक्षा, अस्पृश्यता और वर्ण–व्यवस्था को बढ़ावा दिया है। बाबा साहबका विचार था कि जब इन धर्मशास्त्रों में परिवर्तन हो जाएगा तब समाज में फैले विभिन्न धार्मिक मूल्यों और नियमों में परिवर्तन होना सम्भव है अन्यथा सब ज्यों का त्यों बना रहेगा।[27]बाबा साहब का विश्वास था कि हिन्दु नेता व जनता किसी भी प्रकार से अछूतों का उद्धार नहीं चाहते अतः ऐसी स्थिति में हिंदु धर्म से चिपके रहना बेकार है। इसलिए बाबा साहब ने 1935 के येवला सम्मेलन में हिन्दुओं के अमानवीय अत्याचारों के विरूद्ध हिन्दु धर्म छोड़ने की घोषणा कर दी।[28]

डॉ0 अम्बेडकर के धर्मान्तरण की घोषणा के बाद कांग्रेस के सभी नेताओं व गांधी जी ने घोर विरोध किया। गांधी जी ने धर्म को व्यक्तित्व के लिए आवश्यक बताकर ऐसा न करने का प्रस्ताव रखा। डॉ0 अम्बेडकर ने प्रस्ताव पढ.कर कहा कि हमने अभी यह तय नहीं किया कि हम किस धर्म को ग्रहण करेंगें। लेकिन हिन्दु धर्म हमारी तरक्की में साधक नहीं बाधक है। बाबा साहब के विचार से अचंभित एक शिष्ट मण्डल बाबा साहब से मिलने गया। उन्होंनें शिष्ट मण्डल से विचार–विमर्श कर दृढ़तापूर्वक कहा––अस्पृश्यों के लिए धर्म परिवर्तन के सिवा दूसरा रास्ता नहीं है। डॉ0 अम्बेडकर ने साथ ही लोगों को यह भी भरोसा दिलाया कि धर्म परिवर्तन से देश को कोई नुकसान नहीं होगा।[29]बाबा

साहब की धर्म परिवर्तन की प्रतिज्ञा एक प्रकार की भविष्यवाणी सिद्ध हुई, क्योंकि अपने परिनिर्वाण से लगभग सात सप्ताह पहले 14 अक्तूबर 1956 को उन्होंनें नागपुर में बौद्ध धर्म को स्वीकार किया। बाबा साहब जीवन में शुरू से ही हिन्दु धर्म के विमुख थे। उनकी धर्म–परिवर्तन की कट्टरता को हम उन्ही के शब्दों से महसूस कर सकते है। डॉ0 अम्बेडकर ने कहा था कि ''मैं हिन्दु धर्म में पैदा हो गया हूं, यह मेरे बस की बात नहीं थी, किन्तु मैं किन्तू मैं हिन्दू धर्म में रहकर नही मंरूगा, यह मेरे अपने वश की बात है।[30] डॉ0 अम्बेडकर द्वारा धर्मान्तरण का कार्य भी सामाजिक परिवर्तन की दिशा में उठाया गया कदम है। बाबा साहब ने सोच–विचार कर बौद्ध धर्म को स्वीकार किया ताकि उनको इस धर्म में समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व तथा सामाजिक न्याय मिलेगा। इसके साथ ही उन्होंनें अपने लाखों बन्धुओं को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी।[31]बाबा साहब द्वारा बड़ी मेहनत व लगन से तैयार किया गया हिन्दु कोड बिल सभा में पास न हो सका, लेकिन उसके कई भाग बनाकर संसद द्वारा पास करवाया गया। इनमें हिन्दु विवाह विधेयक 1955 व हिन्दु दतक ग्रहण व निर्वाह विधेयक 1956 में पास हुए। बाबा साहब ने जाति–पाति की दुर्भावना को खत्म करने के लिए सहभोज को नहीं बल्कि अन्तर्जातीय विवाह को साधक बनाया है।[32]

महान विद्वान डॉ0 अम्बेडकर एक महान् समाजशास्त्री थे। उन्होंनें देश को एक विस्तृत संविधान दिया। संविधान के द्वारा उन्होंनें देश के हर वर्ग, नारी, श्रमिक, किसान आदि को कल्याणकारी सुरक्षा विधिवत रूप से प्रदान की। फिर भी कुछ लोगों द्वारा अम्बेडकर को केवल दलितों का मसीहा बताकर उनकी महानता को सीमित कर दिया जाता है। चूंकि देश का संविधान बनाने का गौरव भी डॉ0 अम्बेडकर जी को ही मिला है। समानता, स्वतंत्रता और बन्धुता को विधिवत रूप से भारत में स्थापित करने वाले महान समाज सुधारक डॉ0 अम्बेडकर के कार्यों व प्रयत्नों से आज भी भारतीय शिक्षित नर–नारी पूर्णतः परिचित नहीं है।[33]

निष्कर्षः–

इस प्रकार हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि डॉ0 भीमराव अम्बेडकर सुप्रसिद्ध समाज सुधारक थे। वे हिन्दु धर्म से नहीं बल्कि हिन्दु धर्म की रूढ़िवादी सोच से घृणा करते थे। वे समतावादी विचारधारा के थे तथा समाज के प्रत्येक सदस्य को समान अधिकार दिलाना चाहते थे। डॉ0 अम्बेडकर आजीवन दलितों के उत्थान के लिए लड़ते रहे। उन्होंनें भारतीय संविधान में दलितों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की तथा समाज से अछूत शब्द को मिटाने के लिए छुआछुत को असंवैधानिक ठहराया।अनुसूचित जातियों को देश के सामाजिक ढ़ांचे में स्थान दिलाने के लिए अम्बेडकर ने रेम्से मैकडोनाल्ड सरकार के अधीन आयोजित तीसरे गोलमेल सम्मेलन 1931 में पृथक चुनाव प्रणाली के मुद्दे को उठाया, परन्तु गांधी के जीवन को बचाने के लिए उन्हें पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर करने पड़े तथा संयुक्त चुनाव प्रणाली को मजबूरी वश स्वीकार करना पड़ा। अम्बेडकर यह महसूस करते थे कि वर्ण व्यवस्था ही दलितों की दयनीय स्थिति का मूल कारण है। अम्बेडकर ने इसको दूर करने का अथक प्रयास किया। उन्होनें केवल ऐतिहासिक बातों का ही वर्णन नहीं किया बल्कि अछूत वर्गो का नेतृत्व भी किया तथा उन्होनें इस समस्या के कारणों का भी गहन विश्लेषण किया।अम्बेडकर ने 'जाति–व्यवस्था' को स्पष्ट करने की कोशिश की। उनके अनुसार पहले कोई जाति व्यवस्था नहीं थी बल्कि 'मनु' के बाद ही यह व्यवस्था अस्तित्व में आई। उन्होनें जाति व्यवस्था को श्रेणियों की असमानता कहा है।

अंत मे हम यही कह सकते है कि डॉ0 भीमराव अम्बेडकर एक महान् दलित नेता थे जिन्होनें दलितों को उनके अधिकार दिलाए तथा समाज ने उन्हे गौरव प्रदान किया। इस प्रकार उन्होंनें विद्यावित समाज को संगठित करने के लिए जो प्रयास किया, इसके लिए देशवासी हमेशा इसका ऋणी रहेंगें।

संदर्भ सूचीः–

1. सागर एस0 एल0 (2000) '' डॉ0 अम्बेडकर संक्षिप्त जीवन परिचय'', सागर प्रकाशन, मैनपुरी, पु0 07
2. सर्वेश (2007), '' अम्बेडकर के विचार,'' समता साहित्य सदन'' नई दिल्ली, पृ0 21
3. त्रिपाठी सूर्यनारायण (2004), '' भारत रत्न बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर,''साधना पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृ0 91
4. अम्बेडकर बी0आर0 (1945),''व्हॉट दि कांग्रेस एंड गांधी हैव इन टू डू, ठक्कर प्रकाशन बाम्बे
5. कीर धंनजय (1962), ''डॉ0 अम्बेडकर लाईफ एंड मिशन, ''पापुलर प्रकाशन बाम्बे
6. मेहता चेतन (1991), ''युगद्रष्टा डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, ''मलिक एंड कम्पनी जयपुर
7. लिमये मधु (1997), ''बाबा साहब अम्बेडकर एक चिन्तन, ''आत्माराम एंड संस दिल्ली
8. रतू नानक चन्द (2005), ''बाबा साहब डॉ0 अम्बेडकर संस्मरण और समृतियाँ,'' सम्यक् प्रकाशन नई दिल्ली
9. बौद्ध शीलप्रिय (2008), ''पूना–पैकेट क्यों, क्या और किसके लिए, सम्यक् प्रकाशन नई दिल्ली

10. नेमा जी0पी0(2007),''भारतीय राजनीतिक विचारक'', यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृ0 404
11. पुजारी विजय कुमार (2008), '' डॉ0 अम्बेडकर जीवन और दर्शन, ''सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 54
12. विद्रोही एम0आर0(2004), ''दलित दस्तावेज, '' सम्यक् प्रकाशन नई दिल्ली, पृ0 148
13. सागर एस0एल0 (2000), ''डॉ0 अम्बेडकर संक्षिप्त जीवन परिचय, सागर प्रकाशन मैनपुरी, पृ0 06
14. जाटव डी0आर0 (1996), '' डॉ0 अम्बेडकर के आलोचक,'' समता साहित्य जयपुर पृ0 24
15. कुबेर डब्ल्यू0 एन0 (1995),''आधुनिक भारत के निर्माता डॉ0 भीमराव अम्बेडकर।
16. पोटोरिया राजेन्द्र (1996),''डॉ0 अम्बेडकर चित्रमय जीवनी: पृ0 41
17. कीर धंनजय (1996),''डॉ0 बाबा साहब अम्बेडकर जीवन चरित्र, पापुलर प्रकाशन प्रा0लि0 नई, दिल्ली, पृ0 434
18. कीर धंनजय (1996), उपरोक्त वही पृ0 342
19. शास्त्री सोहन लाल (1998), '' बाबा साहब के सम्पर्क में 25 वर्ष, ''भारतीय बौद्ध महासभा, दिल्ली प्रदेश बुद्ध बिहार, अम्बेडकर भवन नई दिल्ली, पृ0 229–230
20. पुजारी विजय कुमार (2008) उपरोक्त वही पृ0 87
21. मेहता चेतन (1991),''समता के समर्थन अम्बेडकर'' मलिक एंड कम्पनी जालन्धर, पृ0 31
22. मेघवाल कुसुम (2005),''भारतीय नारी के उद्धारक डॉ0 भीमराव अम्बेडकर सम्पर्क प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 139
23. मून बसन्त (2001),'' समता के समर्थक डॉ0 अम्बेडकर, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली पृ0 77
24. मेहता चेतन (1986),'' युग द्रष्टा डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, ''मलिक एंड कम्पनी जालन्धर पृ0 29
25. बाली एल0आ0र0 (1991),''डॉ0 अम्बेडकर ने क्या किया, ''भीम पत्रिका, डॉ0 अम्बेडकर मार्ग जालन्धर, पृ0 182
26. बाली एल0आर0 (1991) उपरोक्त वही पृ0 196
27. आगवले प्रदीप (2005), ''महान समाजशास्त्री बाबा साहब डॉ0 अम्बेडकर, सम्यक् प्रकाशन नई दिल्ली, पृ0 177
28. सागर एल0आर0 (2000) उपरोक्त वही पृ0 15
29. मून बसन्त (1994), ''राष्ट्रीय जीवन चरित् डॉ0 बाबा साहब अम्बेडकर नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, पृ0 98
30. सागर एस0एल0,''डॉ0 अम्बेडकर के सम्पर्क में 25 वर्ष पृ0 238
31. पुजारी विजय कुमार (2008) उपरोक्त वही पृ0 114
32. आगवले प्रदीप (2005) उपरोक्त वही पृ0 179
33. मेघवाल कुसुम (2005) उपरोक्त वही पृ0 78